IJAER/Oct-Nov 2012/Volume-1/Issue-3/Article No-16/ 286-288 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

''किशोरों की बुद्धि लब्धि पर अभिभावकों की शिक्षा का प्रभाव''

Dr. Shweta Sharma
Guest Lecturer
Department of Home Science
CCS University, Meerut

Dr. Kamlesh Sharma
(Ritt.) Prof.
Dr. B.S. Ambedkar National Institute of Social Science
Mahu, Indore, M.P.

सार- *प्रस्तुत अध्ययन किशोरों की बुद्धि लब्धि पर अभिभावकों की शिक्षा का प्रभाव देखने हेतु किया गया। अध्ययन में समग्र के अन्तर्गत इन्दौर शहर के 500 किशोरों (250 किशोर लड़के एवं 250 किशोर लड़कियॉं) को सम्मिलित किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रश्नावली एवं पी0 एन0 मेहरोत्रा द्वारा निर्मित ''बुद्धि' का मिश्रित प्रकार का सामूहिक परीक्षण'' प्रयुक्त किया गया। प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने हेतु काई वर्ग परीक्षण प्रयुक्त किया गया। अध्ययन में किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं अभिभावकों की शिक्षा के मध्य धनात्मक सम्बंध पाया गया।*

प्रस्तावना

विश्व में पाये जाने वाले विभिन्न प्राणियों में मानव अपनी विशिष्ट बौद्धिक क्षमता के कारण ईश्वर की एक अनुपम कृति है। इस क्षमता के प्रयोग से ही मानव आदिकाल से आज तक सतत् उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहा है। यह कोई ठोस वस्तु नहीं है, बुद्धि के विषय में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों में अलग–अलग विचार है : स्टर्न (1914), वेल्स (1936), मन (1955) तथा क्रूज व बर्ट आदि बुद्धि को अभियोजन की योग्यता मानते हैं। एबिंग होस (1897), बंकिंग्हम, डियनबोर्ड, गोगार्ड (1942) व मॉगर्न (1971) इसको 'सीखने की योग्यता' मानते हैं। टर्मन (1921), गैरेट, स्पीयरमैन व बिके के अनुसार–''यह चिंतन की योग्यता है। वेटलर कॉगन व हेवमेन (1974) रेक्साइट तथा स्टोडर्ड के अनुसार बुद्धि एक समग्र योग्यता है तथा बुद्धि को विशिष्ट योग्यताओं के अन्तर्गत मानने वालों में थर्सटन, गिलफोर्ड आदि के नाम मुख्य है।

बुद्धि के विकास के सम्बन्ध में भी विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के भिन्न–भिन्न विचार हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक बुद्धि की वृद्धि 18 वर्ष तक मानते हैं तथा कुछ अन्य मनोवैज्ञानिक बुद्धि की वृद्धि की अधिकतम आयु 24 वर्ष मानते हैं। ऐसा कहा जाता है कि 3 वर्ष की आयु तक कुल परिपक्व बुद्धि की 1/3 बुद्धि विकसित हो जाती है, 6–10 वर्ष की आयु तक 1/3 तथा 16–18 वर्ष की आयु तक शेष 1/3 बुद्धि विकसित हो जाती है, तत्पश्चात् उसमें विकास नहीं होता और वह एक सीधी रेखा का रूप ले लेती हैं। 16–18 वर्ष की आयु में होने वाले अधिकतम विकास के बाद बुद्धि में ह्रास होता भी है तो अधिगम योग्यता एवं व्यवहार की प्रभाविता के दृष्टिकोण से, व्यस्क व्यक्तियों द्वारा प्राप्त किये गये अनुभव इस ह्रास की पूर्ति कर देते हैं। अतः बालक के जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में होने वाले अनुभव बुद्धि के विकास को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं इसके साथ ही साथ अन्य कारकों के साथ, अभिभावकों की शिक्षा व्यवसाय (मुखर्जी एवं शर्मा, 1993 तथा विल्किस एवं उमा देवी, 1999) आदि भी बुद्धि के विकास को प्रभावित करते हैं।

शोध प्रविधि

उद्देश्यः

(1) किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनकी माताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
(2) किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनके पिताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

उपकल्पनाः

(1) किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनकी माताओं की शिक्षा के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।
(2) किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनके पिताओं की शिक्षा के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

समग्र एवं निदर्शन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में इन्दौर शहर के किशोरों को सम्मिलित किया गया है। समग्र के अन्तर्गत 250 किशोर लड़कों व 250 किशोर लड़कियों (कुल 500) को इकाई के रूप में सम्मिलित किया गया। उद्देश्यपूर्ण (सोद्देश्य) निदर्शन पद्धति का प्रयोग समग्र के चुनाव हेतु किया गया। इन्दौर शहर के विभिन्न विद्यालयों द्वारा समग्र का चुनाव किया गया।

उपकरण एवं सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रदत्तों का संकलन प्रश्नावली एवं पी0 एन0 मेहरोत्रा द्वारा निर्मित मनोवैज्ञानिक परीक्षण ''बुद्धि का मिश्रित प्रकार का सामूहिक परीक्षण'' ;डळज्प्द्ध का प्रयोग किया गया। सांख्यकीय विश्लेषण हेतु काई–वर्ग परीक्षण ;ग^{2}द्ध का प्रयोग किया गया।

किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनके पालकों की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध–

सारणी–1

किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनकी माताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध

श्रेणियाँ		**माताओं की शिक्षा**			
		अशिक्षित एवं कम शिक्षित	**मध्यम शिक्षित**	**उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित**	**सार्थकता स्तर**
बुद्धि लब्धि	निम्न	70	35	31	0.01 स्तर पर सार्थक
	मध्यम	67	93	72	
	उच्च	10	40	82	

काई वर्ग मूल्य = 81.938, मुक्तांश = 4

उक्त सारणी–1, किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनकी माताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करती है। सारणी से स्पष्ट होता है कि–

निम्न बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 70 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित माताओं के, 35 किशोर मध्यम शिक्षित माताओं के तथा 31 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित माताओं के पाये गये।

मध्यम बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 67 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित माताओं के, 93 किशोर मध्यम शिक्षित माताओं के तथा 72 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित माताओं के पाये गये।

उच्च बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 10 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित माताओं के, 40 किशोर मध्यम शिक्षित माताओं के तथा 82 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित माताओं के पाये गये।

साँख्यिकीय गणना में, 4 मुक्तांश पर काई वर्ग मूल्य = 81.938 पाया गया जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनकी माताओं की शिक्षा में सम्बन्ध है। अन्य शब्दों में, अशिक्षित एवं कम शिक्षित तथा मध्यम शिक्षित माताओं के किशोरों की अपेक्षा उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित माताओं के किशोर अधिक बुद्धि लब्धि वाले होते हैं।

पूर्व में किये गये अध्ययन में, मुखर्जी एवं शर्मा (1993) तथा बिल्किस एवं उमा देवी (1999) ने बुद्धि लब्धि एवं माता की शिक्षा के मध्य धनात्मक सम्बन्ध पाया।

प्रस्तुत अध्ययन मुखर्जी एवं शर्मा (1993) तथा बिल्किस एवं उमा देवी (1999) के शोध अध्ययनों की पुष्टि करता है।

सारणी–2
किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनके पिताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध

श्रेणियाँ		पिताओं की शिक्षा			
		अशिक्षित एवं कम शिक्षित	मध्यम शिक्षित	उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित	सार्थकता स्तर
बुद्धि लब्धि	निम्न	70	43	23	0.01 स्तर पर सार्थक
	मध्यम	67	76	89	
	उच्च	12	35	85	

काई वर्ग मूल्य = 80.049, मुक्तांश = 4

उक्त सारणी–2, किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनके पिताओं की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

सारणी से स्पष्ट होता है– निम्न बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 70 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित पिताओं के, 43 किशोर मध्यम शिक्षित पिताओं के तथा 23 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित पिताओं के पाये गये।

मध्यम बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 67 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित पिताओं के, 76 किशोर मध्यम शिक्षित पिताओं के तथा 89 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित पिताओं के पाये गये।

उच्च बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 12 किशोर अशिक्षित एवं कम शिक्षित पिताओं के, 35 किशोर मध्यम शिक्षित पिताओं के तथा 85 किशोर उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित पिताओं के पाये गये।

साँख्यिकीय गणना में, 4 मुक्तांश पर काई वर्ग मूल्य = 80.049 पाया गया जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनके पिताओं की शिक्षा में सम्बन्ध है। अन्य शब्दों में, अशिक्षित एवं कम शिक्षित तथा मध्यम शिक्षित पिताओं के किशोरों की अपेक्षा उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षित पिताओं के किशोर अधिक बुद्धि लब्धि वाले होते हैं।

पूर्व में किये गये अध्ययन में, मुखर्जी एवं शर्मा (1993) तथा बिल्किस एवं उमा देवी (1999) ने बुद्धि लब्धि एवं माता की शिक्षा के मध्य धनात्मक सम्बन्ध पाया।

प्रस्तुत अध्ययन मुखर्जी एवं शर्मा (1993) तथा बिल्किस एवं उमा देवी (1999) के शोध अध्ययनों की पुष्टि करता है।

अर्थात् किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनके पालकों की शिक्षा के मध्य सम्बन्ध पाया गया।

REFERENCES

1. Bilques & L., Uma Devi (1999): "Intellectual Abilities of Rural Adolescents", Psycho Lingua, 29, 137-140.
2. Passi, B.K. & Maitis (1993): "Creativity & Gymnastics" National Psychological Corporation.
3. Honzik, Marjoric P. (1967): "Parent-Child Resemblance in Intelligence" in Readings the Psychology of childhood's Adolescence" Edited by Meyer William J., Blaisdell Pub., Company, and London.
4. Guilfard, J. P. (1967) : "The nature of Human Intelligence", McGraw-Hill Book Company, New York.